B.A Part-II, Paper-IV (H)

नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था (नीति)

टिलसिट की संधि के समय नेपोलियन अपने उत्कर्ष पर था। इतिहासकार [illegible] ने लिखा है - "टिलसिट की संधि के समय नेपोलियन का साम्राज्य न केवल अपने उत्कर्ष पर था बल्कि अत्यन्त सुदृढ़ भी था।" यूरोप में अब सिर्फ इंग्लैंड ऐसा देश बचा था जो फ्रांस को चुनौती दे रहा था। ट्राफलगर के युद्ध के समय नेपोलियन समझ गया था कि उसके पास के इंग्लैंड को हराना असम्भव है जब तक कि उसके नौसेना है। इंग्लैंड एक व्यापारिक देश है। अतः उसे आर्थिक युद्ध के द्वारा पराजित किया जा सकता है। आर्थिक युद्ध करने के लिये नेपोलियन ने इंग्लैंड के विरुद्ध एक नयी योजना बनाई। इस योजना के द्वारा इंग्लैंड से आयात एवं निर्यात को बन्द करने का निश्चय किया। इसकी इस योजना को इतिहास में महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental system) कहा जाता है। नेपोलियन ऐसा समझता था कि इंग्लैंड के आयात-निर्यात को बन्द कर देने से आर्थिक स्थिति खराब होने और खाने-पीने की वस्तुओं के अभाव के कारण इंग्लैंड घुटना टेक देगा। नेपोलियन यूरोप में एक ऐसी अर्थव्यवस्था को लागू करना चाहता था, जिसका केन्द्र लन्दन न होकर पेरिस में हो। जैसा कि इतिहासकार [illegible] ने लिखा है - "महाद्वीपीय व्यवस्था इंग्लैंड के निर्यात को बन्द करने की योजना थी। इसका उद्देश्य यूरोप में ऐसी व्यवस्था को विकसित करना था, जिसका मुख्य केन्द्र फ्रांस हो।"

नेपोलियन ने अपनी योजना को राजकीय घोषणा करके लागू किया। सर्वप्रथम ब्रिटिश माल के बहिष्कार के लिये उसने 21 नवम्बर, 1806

Scanned with CamScanner

(21-11-1806) को बर्लिन से घोषणा निकाली जिसके अनुसार इंग्लैण्ड के साथ हर तरह की वाणिज्य एवं व्यावसायिक सम्पर्क वर्जित कर दिया गया और उसने तथा उसके उपनिवेशों से आने वाले माल के व्यापार पर रोक लगा दिया। और यह आदेश दिया गया कि फ्राँस तथा उसके मित्र देशों में इंग्लैण्ड से आने मालों को जब्त कर लिया जाने या नष्ट कर दिया जाये। घोषणा में यह बात स्पष्ट थी कि इंग्लैण्ड तथा उसके उपनिवेश से आनेवाले किसी भी व्यापारिक जहाज का फ्राँस तथा उसके मित्र देशों के बन्दरगाहों में प्रवेश न हो, इस तरह 1806 ई० में यह घोषणा कर के स्पष्ट रूप से ब्रिटिश द्वीपसमूहों की नाकेबन्दी फ्राँस और मित्र देशों के सारे बन्दरगाह इंग्लैण्ड और उसके औपनिवेशिक जहाजों के लिये बन्द कर दिया।

17 दिसम्बर, 1807 में इटली के मिलान से नेपोलियन ने एक आदेश जारी किया, जिसके अनुसार जो कोई भी देश इंग्लैण्ड के साथ व्यापारिक सम्बन्ध रखेगा, उसके जहाजों को जब्त किया जायेगा। इस घोषणा ने तटस्थ देशों पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया।

इसके बाद ब्रिटेन ने भी कुछ ऑर्डर इन कौंसिल (Order in Council) पारित किया। इसमें कहा गया कि जो देश अंग्रेजी माल स्वीकार नहीं करेगा इंग्लैण्ड उसका अवरोध करेगा।

7 जुलाई, 1808 में नेपोलियन ने एक तीसरी घोषणा बेयोने वाली से निकाली। जिसके अनुसार इस घोषणा की अवहेलना करने वाले राजा राज्य या राजा को एक समान अपराध में सजा दी जा सकती थी। नेपोलियन ने जोरी-जोरी वारसा पर भी नियंत्रण लगाया। 25 जनवरी, 1807 में फ्राँस के शत्रुओं के लिये एक घोषणा की उसे और उन्हें ब्रिटिश माल का बहिष्कार करने

का आदेश दिया गया। उसने 5 अगस्त, 1808 में कठोर व्यापारिक नियम बनाया, जिसके अनुसार ब्रिटिश मालों का तस्कर व्यापार होने पर वस्तु की कीमत का 50% कर के रूप में लेने का नियम बना। इतना ही नहीं उसने इंग्लैण्ड जानेवाले या किसी अंग्रेज को लिखे गए पत्रों पर भी अपने राज्य में प्रतिबन्ध लगा दिया।

इंग्लैण्ड ने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया। पीट के निर्देशन में ब्रिटिश सरकार ने कई घोषणाएँ निकाली। 7 जनवरी, 1807 में ब्रिटिश सरकार ने नियम बनाया जिसके अनुसार फ्रांस तथा उसके सहयोगी राष्ट्र के व्यापार पर प्रतिबन्ध लगा दिया। ~~और अपने व्यापार~~ एक घोषणा के अनुसार "तटस्थ देशों के जहाजों को भी पहले इंग्लैण्ड के बन्दरगाहों में आना आवश्यक है तब वे यूरोप के बन्दरगाहों में जा सकते हैं।

नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था को प्रभावी बनाने के लिये अनेक प्रयास किया।

रूस के साथ समझौता - टिलसिट की संधि को रूस के जार को इस योजना को स्वीकार करने के लिये नेपोलियन ने उसे फिनलैण्ड तथा तुर्की का कुछ भाग देने का वादा किया।

आस्ट्रिया पर दबाव - 28 फरवरी, 1808 ई० को नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था स्वीकार करने के लिये विवश किया।

स्पेन पर अधिकार - नेपोलियन ने स्पेन के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया। ~~अतः~~ अतः स्पेन ने भी इस योजना को स्वीकार कर लिया।

पुर्तगाल पर अधिकार - नेपोलियन के इस योजना को मानने से इंकार कर दिया। अतः नेपोलियन ने पुर्तगाल

Scanned with CamScanner

पर आक्रमण कर दिया। पुर्तगाल के राजा ब्राजील भाग गया यहीं से प्रायद्वीपीय युद्ध प्रारम्भ हुआ।

पोप को बन्दी बनाना - पोप ने महाद्वीपीय व्यवस्था को मानना नहीं लेकिन रोम को तटस्थ घोषित किया। इस पर नेपोलियन ने पोप पर आक्रमण कर दिया। तथा पोप को बन्दी बना लिया। और रोम पर कब्जा कर लिया। पोप को बन्दी बनाना नेपोलियन की सबसे बड़ी राजनीतिक भूल थी। इससे कैथोलिक नेपोलियन से नाराज हो गये।

प्रशा से संधि - महाद्वीपीय व्यवस्था में प्रशा को शामिल करने के लिये नेपोलियन ने प्रशा से संधि कर ली।

स्वीडन - नेपोलियन ने स्वीडन को जीत लिया, और उसे महाद्वीपीय योजना में शामिल कर लिया।

हॉलैण्ड का फ्रांस में विलय - हॉलैण्ड का शासक नेपोलियन का भाई लुई बोनापार्ट था लेकिन उसने इस व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया। 9 जुलाई, 1810 को नेपोलियन ने हॉलैण्ड को फ्रांस में मिला लिया।

शेष उत्तर class में

अर्पणा